Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

पद्मश्री डा. उषाकिरण खानक 'हसीना मंजिल' उपन्यासमे स्त्री पात्रक जीवन

डा. अरुणा चौधरी
एशोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना

मेघा झा
शोधार्थी, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

Article Info
Volume 5, Issue 3

Page Number : 41-46

Publication Issue :
May-June-2022

Article History
Accepted : 01 May 2022
Published : 10 May 2022

सारांशः- मैथिली साहित्यमे एकसँ एक रचनाकार भेलथि जे मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध करबामे पूर्ण मनोयोगसँ अपन-अपन मनपसंद रचनाक माध्यमसँ योगदान दैत आबि रहलनि अछि। पुरुषक संग-संग अनेको महिला लोकनि सेहो अपन-अपन रचनासँ माँ मैथिलीक शृंगार करैत रहलीह अछि जाहिमे एक टा नाम पद्मश्री उषाकिरण खानक नाम आदर बड्ड आदरक संग लेल जाइत अछि। एखन धरि मैथिली साहित्यमे हिनक छओ टा उपन्यास छनि - पहिल अनुतरित प्रश्न (1980), दोसर दूर्वाक्षत (1987), हसीना-मंजिल (1995), भामती (2007), पोखरि-रजोखरि (2017) आ छठम मनमोहना रे (2020)। दू गोट कथा संग्रह - काँचहि बाँस (2003) आ गोनू झा क्लब (2016); चारि गोट नाटक - फागुन, मुसकौलवला, चानोदाई, एकसरि ठाढ़ि; दू गोट बाल उपन्यास - बाल महाभारत, लड़ाकू जनमेजय। दू गोट नाट्य रूपांतरण- नवतुरिया (यात्री) आ मार्यादा भंग (हरिमोहन झा) एतेक हिनक रचना प्रकाशित, प्रसंशित आ बहुचर्चित अछि।

मुख्यशब्दाः - नवतुरिया, मैथिली

उषाकिरण खानक जन्म “लहेरियासरायमे 24 अक्टूबर 1945 ई.”[1]मे भेल। जखन ओ सात बरखक छलीह तखन हुनका शिक्षाक लेल पटना ऐंग्ल गर्ल्स हॉस्टल भेजल गेल। ई क्रिश्चियन

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आदिवासीक लेल छल परंच विशेष आग्रहपर हिनक प्रवेश भ' गेलन्हि। ओतहि तीन वर्ष रहलीह। तदुपरान्त कोनो कारणवश लहेरियासराय एल. आर. गर्ल्स स्कूलमे दाखिला ल' लेलीह। बी. ए. आनर्स (इतिहास एवं पुरातत्व)सँ पटना कालेजसँ कयलनि। पटना विश्वविद्यालयसँ प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्वसँ एम. ए. कएलनि। ओकर बाद एशियाई स्टडीज (मिथिला संस्कृतिक परिपेक्ष्यमे) शोध-कार्य कए पी. एच. डी. उपाधि प्राप्त कयलनि।

हुनक साहित्यिक उत्कृष्ठताकेँ देखैत अनेक संस्थान हुनका सम्मान प्रदान कएलक। एहिमे प्रथम बिहार राष्ट्रभाषा परिषद 1998 ई.मे हिनका हिन्दी सेवी पुरस्कार प्रदान कएलक। दोसर राजभाषा विभाग 2000 ई.मे महादेवी वर्मा पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएलक। 2001 ई.मे बिहारमे दिनकर राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान कएल गेल। 2010 ई.मे भारत सरकार दिल्लीक संस्था साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वार साहित्य अकादमी पुरस्कार हुनक मैथिली उपन्यास 'भामती'क लेल प्रदान कएल गेल। 'सिरजनहार' उपन्यासपर 2012 ई.मे कुसुमांजलि फाउण्डेशन, दिल्ली द्वारा कुसुमांजलि पुरस्कार भेटलनि। 2014 ई०मे विद्या श्रीनिवास (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)सँ भेटलनि। सिरजनहार उपन्यासपर पं. विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार प्राप्त कएलनि। डा. खान अनेक साहित्यिक डेलिगेशनमे चयनित भए विदेश तक यात्रा कएलनि जाहिमे विश्व हिन्दी सम्मेलन सूरीनाममे 2004 ई०मे भारत सरकारक प्रतिनिधिक रूपमे 2002 ई.मे विश्व हिन्दी सम्मेलन, न्यूयार्कमे बिहार सरकारक प्रतिनिधिक रूपमे, 2000 ई.मे विश्व भोजपुरी सम्मेलन (सेतुन्यास) मारिशसमे, बिहार सरकारक प्रातिनिधिक रुपमे हिनका 2015 ई.मे पद्मश्री पुस्कारसँ सम्मानित कएल गेल। एकर अतिरिक्त कवि रमण पुरकार -1982, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद हिन्दी सेवा-1993, स्पंदन पुरस्कार – भोपाल – 2013, ब्रजकिशोर वर्मा पुरस्कार 2015, शरच्चंद्र सम्मान पुरस्कार - 2017, कोशी पुरस्कार - 2018, उ. प्र.क सौहार्द्य पुरस्कार – 2016, भारत भारती 2018, प्रबोध साहित्य सम्मान - 2020 आदि पुरस्कारसँ सम्मानित कएल गेल।

उषाकिरण खानक बेसी रचना स्त्री प्रधान अछि। स्त्रीकेँ ओ अपन रचनाक मुख्य पात्र बनबैत छथि कियाकि, कहबी अछि जे 'खग जाने खगहिक भाषा', वे क्या जाने पीर पराई, जिसके पाँव न फटे विवाई'। मैथिलीमे कहबी अछि बाँझ की जानय प्रसूतिक दर्द' तेँ एक महिले एक व्यथित स्त्रीक व्यथाकेँ खूब नीक जकाँ बूझि सकैत छथि आ विशेष क' हुनका बुझबामे अबैत छनि जे ओहन स्थिति, परिस्थिति मे जीवनकेँ जीने छथि। 'हसीना मंजिल' उपन्यासमे लेखिका स्त्रीकेँ मुख्य पात्र

बनौने छथि। एहिमे दू टा स्त्री पात्र प्रमुख पात्र छथि - हसीना आ सकीना। ई उपन्यास दू पीढ़ीक कथा कहैत अछि। हसीनाक पति उसमान जे कहियो जवान छल। देकुलीसँ एहि नगर अपन बाबू संगे अपन शीशाबाला कंगना पहुँचाबय आबय छलैक। दुर्गा पुजामे लहठी बहुत रास बिकाय। ओहि ठाम एक दिन ओकर लगनक गप्प भेलैक। हसीना संग निकाह भ' गेले बीस टाका मेहरे करारपर। से हसीना छल गजब सुन्नर।

हसीनाक कइएक वर्षक बाद जखन गौना भेलैक तखनहि लहेरियासरायमे दंगा-फसाद भेल छलैक। आगि पझा गेल मुदा किछ गोटेक हृदय क्षत-विक्षत भ' गेलैक। किछ लोक नीक भविष्य आ नवका सपनाक कारणे पड़ाय चाहैत छल। उसमान तकर प्रारम्भ कैलक।

उसमान हसीनाकँ देखने नहि छल मुदा ओकर सुन्दरताक चर्चा सौंसे पसरल छल। लेखिका बहुत स्थानपर पात्रक मुँहें हसीनक सौन्दर्यक बखान करबौलनि अछि- "उज्जर शेखिन सन सकल आ आँखि केहन कारी-कारी चेङा माछ चमचीनीक नवका कटोरी मे छटपटाइत होई"[2]

प्रसिद्ध चित्रकार उपेन्द्र महारथी हसीनाकँ चूड़ी पहिराबय के बहन्नासँ बजा क' ओकर चित्र बनबय छलाह। उपेन्द्र महारथीक शब्दमे देखल जाय- "भौजी हसीना कँ देखै छियै, ओकर आँखि देखलियै? ओहन आँखि हम नइं ककरो देखलियै! हम तकर चित्र बनबय चाहैत छी तें सब दिन ओकरा बजा अनै छी।"[3] एहि तरहें उपेन्द्र महारथी अपन कतेको चित्रमे हसीनाक आँखि देने छलाह। हसीनाक सौन्दर्यकें देखि चित्रकार लोकनि विस्मित रहैत छलाह।

हसीना एक चूड़िहारिन छलीह। घरे-घर जा क' चूड़ी बेचय छलीह। गौनाक बाद सम्पूर्ण गृहस्थी सम्हारि लेने छलथिन। देखल जाय लेखिकाक शब्दमे - "उसमानक माय दुलहिनसँ खुश रहैक। दुलहिन ढेकी पर धान कुटि लैक, सालन भात पका लैक, आँगन सब खूब साफ राखै।"[4] एहि तरहें कहि सकैत छी जे हसीना सर्वगुण सम्पन्न महिला छलीह।

हसीना जखन गर्भवती भेलि त' चारू दिस हर्षोल्लासक वातावरण पसरि गेलैक। ओहि बीच दू सम्प्रदायक बीच लड़ाई भेलय। ओहिमे सब किया अपन जीवनक निर्वाहक लेल अपन देश छोड़ि पाकिस्तान जाय लागल। उसमान सेहो पाकिस्तान जाय अपन जीवन निर्वाह करय चाहैत छल मुदा हसीना नहि मानल। ओ अपन देश छोड़ि जयबाक लेल नहि मानल। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे ओ अपने माटि-पानिसँ जुड़ल रहय चाहत छलीह। हुनका मनमे अपन देशक प्रति प्रगाढ प्रेम छलनि।

हसीनाकेँ छोड़ि जखन उसमान पाकिस्तान चलि गेल त' हसीनाकेँ एक टा बेटी भेलैक। उसमान अपन रोजगारमे ओतय लागि गेल। ओतय जा क' ओ दोसर विवाह क' लेलक। किछु दिन प्रतिक्षा कयलाक बाद हसीना अपन बहनोइक संग घर बसौलथि आ अपन पएरपर ठाढ़ रहबाक प्रयास कयलनि। एहि तरहेँ हम कहि सकैत छी जे हसीना एक आत्मनिर्भर महिला छलीह।

सकीना – सकीना एहि उपन्यासक मुख्य स्त्री पात्र छथि। उपन्यासक प्रारम्भ सकीनासँ भेल अछि। सकीना, हसीना आ उसमानक बेटी छलीह। सकीना अपन माय जकाँ चूड़ीहारिनक काज करैत छलीह।

सकीनाक घर लग प्रतिदिन एक बूढ़ व्यक्ति अबैत छलथिन्ह आ किछु देर ठाढ़ भ' क' चलि जाइत छलथिन्ह। ओ एक दिन बूढ़सँ पुछैत छथि- जे तोरा की चाही? कियाक प्रतिदिन अबैत छह? सकीनाकेँ ओहि बूढ़ व्यक्तिसँ एक प्रकारक विशेष स्नेह भ' गेल रहैक। एक दिन ओ ओहि बूढ़ व्यक्तिसँ पूछलैक- "पानि पीब' हो बाबा? प्रतिदिन आब'बला एहि मूक प्रायः बूढ़ासँ जेना सकीनाकेँ परिचय भ' गेल होइक। जेनर ओकरा पसेना सँ डुबल मकड़ीक जाल सन झुर्रीबला सकलसँ अपनैती भ' गेल होइक। ओकर फुफड़ी पड़ल ठोर देखि मोनमे दया उजजलै।"[5] एहि प्रसगसँ बुझाइत अछि जे सकीना एक दयालु स्त्री छलीह।

सकीनाक पति ओकरा छोड़ि क' अरब चलि जाइत छैक। ओतय जा क' ओ दोसर विवाह क' लैत छैक। सकीना चूड़ीहारिनक काज क' क' कहुना बच्चा सभकेँ खुआबैत छथीन। ईदपर कपड़ा खरीद दैत छथीन आ पाठशालामे पढ़बैतं छथि। दिन-राति मेहनत क' बच्चाक पालन-पोषण करैत छथि। एहिसँ बुझाइत अछि जे सकीना बड्ड परिश्रमी, मेहनती आ साहसी महिला छथि!

सकीना ओतय जे बूढ़ रहैत छथि ओ ओकर पिता छथि। ओ सकीनाकेँ लहठीक विभिन्न डिजाइन बनबय सीखबैत छथि। सकीना खूब मोनसँ सीखैत छथि। बूढ़क बनाओल लहठी बाजारमस 'नगीना डिजाइन' बाजारमे खूब बिकाइत अछि। एहिसँ सकीनाक आर्थिक स्थिति नीक भेल जाइत अछि। चारू कात ओकर कलाकारीक चर्च होबए लगैत अछि। सकीनाकेँ भारत सरकार द्वारा 15 अगस्तकेँ सम्मानित कयल जाइत अछि। देखल जाय लेखिकाक शब्दमे – "सकीना बानो को उनकी लोक कला (लाहक चूड़ी) के विशिष्ट ज्ञान के लिये कला अकाकमी, बिहार ने पुरस्कार के लिए चुना है। आगत स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को माननीय मख्यमंत्री के हाथों पदक एवं 25 हजार रुपये की

राशि गाँधी मैदान, पटना में प्रदान किया जाएगा।"[6] मिथिला समाज सेहो सकीनाकेँ सम्मानित कएलक – "बड़की टा समारोहमे सकीना के इनाम भेटलै। एक हजार एक टाका, फूल काढ़ल उज्जर शाल- चादर आ एक टा तामाक पत्तर जाहिमे नाम आ इनामक चर्चा छलैक।"[7] कला अकादमीक तरफसँ एक आयोजन भेल छलैक जाहिमे सकीनाकेँ प्रति मास पाँच सय टाका देबाक निर्णय भेल छलैक।

एहि तरहेँ देखैत छी जे सकीना अपन परिश्रमसँ नाम, इज्जत कमौलनि। सकीना एक आत्मनिर्भर महिला छलीह। सकीना जखन लहठीक दोकान खोललथि, ओकर नाम अपन माय (हसीना)क नामपर रखलथि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे सकीना एक आदर्श पुत्री छलथि।

जैनब- जैनब सकीनाक नेनपनक संगी छथि आ सकीनाक माय कमरुक पत्नी छलीह। "जैनब हसीनाक सखी सुपारी कुलसुमक बेटी छली।"[8] जैनब हसीना-मदीनाक पुतहु सेहो छलीह। जैनब चूड़ी बेचयके काज करैत छलीह। जैनबक बाल-बच्चा पैघ-पैघ छलैक। ओकर चूड़ीक अपन दोकान सेहो छलैक जाहिमे ओकर पति आ सासु बसैत छलैक। ओ निश्चिन्तसँ भोजन पका क' शृंगार क' चूड़ीक छिट्टा माथपर ल' क' बेचय जाइत छलैक। "जैनब कुलसुम सन उज्जर दप्-दप् छै आ ओकरे जकाँ कुइराओन आँखि छैक। छोट नाटी माउग छैक।"[9]

कुलसुम- कुलसुम हसीनाक संगी आ उसमानक बहिन छलि। कुलसुम एक हँसमुख लड़की छलीह। हसीना जे ओकर संगी छलीह, विवाहसँ पहिने ओकरा संगे खूब चौल करैत छलीह। कुलसुम एक भावुक स्त्री छलीह। जखन उसमान अपन देश छोड़ि पाकिस्तान जाय लगैत छथि- "बहिन कनैत बाजल छलैक। बउआ तोँ सौंसे तलाबक एक्के टा पोठी छलह, चल जएबह दूर देश तँ बड्ड सून लागत।"[10] एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे कुलसुम एक भावुक महिला छलीह।

मदीना- मदीना, हसीनाक पैघ बहीन छलीह। दुनू बहिनी संगे चूड़ी बेचय जाइत छलीह। मदीनाक गौना भेला बारह बरख भ' गेल छलैक। एखन धरि संतान नहि भेल छलनि मुदा मदीनाक पति बहुत नीक लोक छलाह। ओकरा विश्वास छलैक अल्लाहपर मुदा मदीना उदास रहैक। मदीनाक पति अहमद मिया संग सेहो बादमे हसीना अपन घर बसौलक।

एहि सब स्त्री पात्रक अतिरिक्त अनेको स्त्री पात्र एहि उपन्यासमे छथि। एहिमे स्त्री जीवनक संघर्षकेँ दर्शाओल गेल अछि। हसीनाक प्रारम्भमे दाम्पत्य जीवन अखण्डित रहैत अछि मुदा बादमे

खंडित भ' जाइत अछि आ किछु समयक लेल एकाकी जीवन जीबाक लेल विवश भ’ जाइत छथि संगहि जखन हुनका ई बुझना जाइत छनि जे एकाकी जीवन जीयब पहाड़ सन भारी आ कठिन होइत अछि त’ एहि परिस्थितिसँ उबरबाक लेल युक्ति लगबैत अपन बहनोई अहमद मियासँ खुल्ला क’ लैत छथि। हसीनाक मरलाक बादो हुनकर इच्छा छलनि जे संतानकेँ बापक स्नेह भेटय, से ओकरा एक टा नहि दू टा बापक स्नेह भेटलैक। सकीना अपन अब्बाक सहायतासँ लहठी बनयबाक खूब कलाकारी सिखलनि जाहिसँ ओ अपन जीवनमे बहुत आदर आ सम्मान पओलनि। ई सब हसीना मरणोपरांत जन्नतसँ देखि हृदयसँ गदगद आ हर्खीत भेल हेतीह।

एहि तरहेँ कहि सकैत छी जे पद्मश्री डा. उषाकिरण खान ‘हसीना मंजिल’ उपन्यासमे स्त्री-जीवनक संघर्षकेँ सहज, सरल आ मनोरम रूपसँ वास्तविक रूपमे चित्रण कएलनि अछि।

संदर्भ ग्रंथक सूची-

1. भविष्णु- रमण कुमार झा, पृष्ठ सं.- 135
2. हसीना मंजिल- पद्मश्री डा. उषाकिरण खान, पृष्ठ सं.- 20
3. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 27
4. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 22
5. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 07
6. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 97
7. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 105
8. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 29
9. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 24
10. उपरोक्त, पृष्ठ सं.- 37